Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में उभरती हुई प्रवृत्तियाँ एवं भारत की भूमिका

Dr. Sonu*

Extension Lecturer in Political Science, Govt. College for Women Badhra, Charkhi Dadri, Haryana

शोध-आलेख सार: *इस शोध पत्र में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र तथा उसमे उभरती शक्तियों एवं प्रवृत्तियों के विषय में बताया गया है। इस क्षेत्र में उभरती हुई प्रवृत्तियों को दर्शाया गया है। जैसे सामरिक प्रवृत्तियाँ, प्राकृतिक संसाधन, व्यापार, आर्थिक प्रवृत्ति, नेवी सुरक्षा, संगठनों की भूमिका आदि को दर्शाया गया है। इस क्षेत्र में विश्व का लगभग 67 प्रतिशत व्यापार होता है। इस में अमेरिका, चीन तथा एशिया के राष्ट्रों की भूमिका को दर्शाया गया है। इस शोध पत्र में भारत की विदेशनीति को भी दर्शाया है। भारत की विदेशनीति के कारण ही इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन बना हुआ है। इस शोधपत्र में बताया गया है कि भारत ने अपने पूर्व के राष्ट्रों के साथ किस प्रकार संबंधों में सुधार किए है। भारत में Act East Policy बनाई है। इस पॉलिसी के तहत भारत में दक्षिणी कोरिया, जापान तथा आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों के साथ संबंध बढ़ाऐ है। भारत में इस क्षेत्र में चीन तथा अमेरिका की भूमिका तथा अधिकार क्षेत्र को रोकने के लिए अनेकों संगठनों तथा राष्ट्रों के साथ समझौता किया है।*

मुख्य-शब्द: *इंडो-पैसिफिक क्षेत्र,उसमे उभरती शक्तियों,सामरिक प्रवृत्तियाँ, प्राकृतिक संसाधन, व्यापार, आर्थिक प्रवृत्ति, नेवी सुरक्षा।*

----------X----------

भूमिका:

विश्व राजनीति देशो के राष्ट्रीय हितो से संचालित होती है। जैसा की अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में किसी राष्ट्र के हितो की पहचान करना अब मुश्किल नहीं रहा है। सभी राष्ट्र अपने-अपने संसाधनों को सुरक्षित रखकर दूसरे अप्रत्यक्ष माध्यम से संसाधनों की साम्राज्यवादी होड़ में शामिल हो चुके हैं। ऐसी ही परिस्थितियाँ इंडो-पेसिफिक क्षेत्र में उभर कर सामने आ रही है। जैसा कि सभी जानते है कि इस क्षेत्रमें विश्व राजनीति में सामरिक महत्त्व के साथ-साथ आर्थिक संसाधनों के कारण भी यह क्षेत्र उभर कर सामने आ रहा है।

शोध-प्रविधिः

इस शोध-पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ-साथ शोधकत्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

जब भी हम इंडो-पेसिफिक क्षेत्र की बात करते है तो हमारे सामने सर्वप्रथम चीन, भारत, जापान, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, फिलीपिंस तथा वियतनाम जैसे देशो के नाम आते है। यह क्षेत्र पूर्वी अफ्रिका महाद्वीप के तट से भारतीय हिंद महासागर से लेकर पश्चिमी प्रशांत महासागर तक फैला हुआ है।

हिन्द महासागर तथा प्रशांत महासागर विश्व के दो बड़े महासागरों में से एक है जहाँ हिन्द महासागर की सीमा एशिया तथा अफ्रीका के देशों को छूती है। वहीं दूसरी ओर प्रशांत महासागर एवं दक्षिणी अमेरिका के अनेक देशों की सामुहिक सीमाओं को छुती है।

हिन्द महासागर पर जहाँ चीन अपना वर्चस्व स्थापित किए हुआ है वहाँ प्रशांत महासागर पर अनेक देशों के संगठनों ने एक दूसरे देशों के आर्थिक सहयोग के उद्देश्य से संगठनों का निर्माण किया हुआ है। जैसे "प्रशांत द्विपीय मंच , एशिया प्रशंत आर्थिक सहयोग आदि है।

इन संगठनों में APEC सबसे महत्वपूर्ण है। इसमें एशियन आस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका के 21

www.ignited.in

राष्ट्र शामिल है। इसकी स्थापना 1989 में हुई इसकी बैठक प्रति वर्ष होती है। वर्तमान में इसकी बैठक चीन की राजधानी बीजिंग में हुई। एपेक को बनाने का सुझाव आस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री बाव हाक ने दिया था।

एपेक के राष्ट्र - आस्ट्रेलिया, अमेरिका बुनेइ, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, मलेशिया आदि। भारत अभी तक इसका सदस्य नहीं बना है। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मकाउ, मंगोलिया आदि राष्ट्र एपेक के सदस्य बनने के इच्छुक है। विश्व की GDP में एपेक के राष्ट्रों की भागीदारी 57% है। और विश्व व्यापार में लगभग 46% है। भारत एपेक में केवल पर्यवेक्षक के रूप में सदस्य है। पहली बार भारत को वर्ष 2011 में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। लेकिन अपनी व्यवस्थताओं के कारण भाग नहीं ले पाया।

इस क्षेत्र में चीन एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरकर सामने आया है। चीन इस क्षेत्र के सभी एशियाई राष्ट्रों में सबसे शक्तिशाली राष्ट्र है। प्रो0 केरावन का मानना है की चीन 2030 तक आर्थिक तथा सैन्य क्षेत्र में अमेरिका से भी आगे निकल जाऐगा। लेकिन अमेरिका पिछले 60 वर्षों से आस्ट्रेलिया, जापान और फिलीपींस जैसे कई राष्ट्रों के सहयोग से इस क्षेत्र को सुरक्षित रखने में अहम भुमिका निभा रहा है। उनका मानना है कि बिना अमेरिका की सुरक्षा ढाल के बैगर यह क्षेत्र अकेला इतनी प्रगति नहीं कर सकता था। भारत-जापान समझौता 2008, भारत-वियतनाम, भारत-आस्ट्रेलिया या 2+2 समझौते तो दोयम दर्जे के समझौते है। ये सभी राष्ट्र प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप् से चीन तथा अमेरिका के समुह से ही संबंध रखते है। उन्होने बताया की एशिया का बढ़ता रक्षा बजट एक दिन युरोप को पिछे छोड़ देगा।

इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों भरपूर मात्रा में पाऐ जाते हैं। जैसे पेट्रोलियम, खनिज पदार्थ, हाड्रोकाबर्न से संबंधित सभी उत्पाद, मछली उत्पाद आदि पाऐ जाते हैं जो किसी भी राष्ट्र की ळक्च् को ऊपर उठाने में अहम भुमिका निभाते हैं। इसी कारण प्रत्येक राष्ट्र चाहता है कि इस क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा उनका अधिकार क्षेत्र हो। इसी कारण इस क्षेत्र का महत्व बढ़ता जा रहा है तथ प्रत्येक राष्ट्र किसी न किसी तरीके से इसमें अपनी भागीदारी निभाना चाहता है।

इस क्षेत्र में विश्व का लगभग 60% समुद्री व्यापार होता है जिसमें मल्लका जल डमरू इस क्षेत्र के लिए व्यापारिक चैहराहा बन गया है। इस क्षेत्र में अनेको बंदरगाह है जिनसे विश्व का लगभग 60% व्यापार होता है इसलिए प्रत्येक राष्ट्र चाहता है कि इस क्षेत्र में वे भी अपने राष्ट्र की बंदरगाह स्थापित करें। इन राष्ट्रों का बंदरगाह स्थापित करने का उद्देश्य इस क्षेत्र पर अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ाना है।

इस क्षेत्र में विश्व के अनेकों राष्ट्रों के नवल बेस स्थापित है। तथा इन नवल बेस के आधार पर ही वे एक दूसरे राष्ट्रों पर नजर रखते हैं। जैसे अमेरिका, चीन, भारत, आस्ट्रेलिया, जापान आदि सभी का समुद्रि बेड़ा इस क्षेत्र में है। जो अपने पड़ोसी राष्ट्रों पर निगरानी रखता है। जिन राष्ट्रों का सामुहिक बेड़ा इस क्षेत्र में नहीं है वे इस क्षेत्र में अपना नवल बेस बनाने के इच्छुक है इसी कारण वे चीन, अमेरिका, भारत, आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों के साथ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप् से जुडे हुए है।

इस क्षेत्र में विश्व के लगभग 25 राष्ट्रों तथा कुछ द्वीप शामिल है। इतने राष्ट्रों के होने के कारण इस क्षेत्र को शांतिप्रिय बनाने के लिए अलग-अलग राष्ट्रों ने सहयोग किया है तथा अनेको संगठनों तथा संधियों ने अपनी भुमिका निभाई है। जैसे चीन को रोकने में जापान, भारत, अमेरिका आदि की भुमिका रही तथा अमेरिका को रोकने में चीन आदि की। तथा अनेकों संगठनों जैसे एपेक, आसियान, सार्क, बिम्सटेक, हिमतक्षेस आदि की भुमिका रही है। इन संगठनों ने इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाने में अहम भुमिका निभाई है।

विश्व के सबसे बड़े सामुद्रिक क्षेत्र में भारत की भुमिका भी अहम रही है। भारत की विदेशनीति का इस क्षेत्र में शान्ति बनाए रखने में अहम भुमिका है। भारत की विदेशनीति प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक की नीति विश्व में शान्ति बनाए रखने तथा आपसी सहयोग की रही है। भारत के संबंध पडोसी राष्ट्रों से बड़े ही मधुर रहे है चाहे चीन हो या श्रीलंका।

हिन्द महासागर में जहां चीन का वर्चस्व है वहां भारत ने शांति बनाए रखने में अहम भुमिका निभाई है। हिन्द महासागर में लगभग 12600 टापु है तथा संसार में टैंकरों द्वारा ढोये जाने वाले खनिज तेल का 57% और्मुज जलडमरूमहय से होकर गुजरता है। लगभग 1 मिनट में एक जहाज यहां से गुजरता है। हिन्द महासागर में अमेरिका ने 1949 में अपनी उपस्थिति दर्ज की थी और आज अमेरिका के हवाई पट्टी तथा बन्दरगाह, मिस्त्र, पाकिस्तान, सोमालिया, किनीया, ओमान, आस्ट्रेलिया, जिबुती आदि में है। रूस ने भी अपनी बन्दरगाह तथा हवाई अड्डे बनाए है लेकिन वे अमेरिका की तरह स्थाई नहीं है। री युनियन द्वीप पर फ्रांस का अधिकार होने के कारण वह भी इस क्षेत्र में घुसपैठ करता है।

www.ignited.in

चीन द्वारा इस क्षेत्र में की गई गतिविधियों से इस क्षेत्र की चिन्ता ज्यादा बढ़ जाती है। चीन ने PLAN (पीपुल लिबरेसन आर्मी नेवी) के तहत 2020 तक हिन्द महासागर पर अपना अधिकार जमा रखा है। चीन की पाकिस्तान के ग्वापर में बंदरगाह के साथ-साथ पूर्व में को द्वीप पर अधिकार क्षेत्र के साथ-साथ भारत की घेरेबंदी के गम्भीर कदम उठा रहा है। चीन, अमेरिका, फ्रांस, एशिया आदि के अलावा अनेको राष्ट्रों ने इस क्षेत्र को आतंकवाद का अड्डा बना दिया है। जैसे फ्री एसे यूबमेण्ट, इस्लामिक लिबरेसन फ्रण्ट, अबू सयाक, अलकायदा आदि।

हिन्द महासागर में भारत की भुमिका भी इतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की चीन, अमेरिका, एशिया की है। हिन्द महासागर में भारत के लगभग 1156 द्वीप है तथा हिन्द महासागर की कुल तटरेख का 12.5% भाग भारतीय तटरेखा है। भारत का 98% अन्तराष्ट्रीय व्यापार हिन्द महासागर से ही होता है। भारत का 63% पेट्रोलियम तथा खनीज तेल समुद्री क्षेत्रों से ही प्राप्त होता है। हिन्द महासागर के अनेक छोटे-छोटे देशों के हितों की रक्षा भारत ही करता है। हिन्द महासागर में चीन, अमेरिका आदि राष्ट्रों के हस्तक्षेप से भारत की चिंता बढ़ती जा रही है क्योंकि भारत तीन दिशाओं से हिन्द महासागर के जल को छुता है। भारत की सीमाऐ हिन्द महासागर में सैकड़ों मील दूर तक फैली है भारत को दूसरे महाद्वीपों तथा राष्ट्रों से जोड़ने वाले वायु मार्ग तथा समुद्री भाग इसी क्षेत्र से गुजरते है। इसी कारण भारत को अधिक चिंता रहती है। 1964 में छ।ड (गुटनिरपेक्ष) के सम्मेलन में हिन्द महासागर को शांति और चैन का क्षेत्र घोषित करने का प्रस्ताव रखा तथा यह घोषणा की गई की इस क्षेत्र से सभी राष्ट्रों के सैनिक अड्डों को समाप्त किया जाऐगा। भारत का पहल करने के पीछे यह कारण था कि इस क्षेत्र की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व भारत करता है। भारत इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाने में अहम भुमिका निभा रहा है। भारत एक ऐसा देश है जो एशिया तथा अन्य महाद्वीपों के संगठनों के साथ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। भारत का संबंध आसियान से भी है, एपेक से भी है, सार्क से भी है, भारत अमेरिका के साथ भी संधि समझौते करता है चीन के साथ भी, जापान के साथ भी, दक्षिण कोरिया के साथ भी अतः हम कह सकते है की भारत इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन बाने में अहम भुमिका निभा रहा है । भारत बहुघुरीयकरण का समर्थन करता है। भारत ने इस क्षेत्र में शांति बनने तथा शक्तिशाली राष्ट्रों की साम्राज्यवादी नीतियों को रोकने के लिए अनेकों राष्ट्रों के साथ समझौते किए। इन समझौतों में मुख्य समझौते जापान, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण कोरिया के साथ किए गए है। भारत ने अपनी पुरानी नीति लुक ईस्ट पोलिसी को एक्ट ईस्ट पोलिसी बना दिया। इस पोलिसी का भी इस क्षेत्र पर प्रभाव पड़ा है। भारत ने अपने पूर्वी राष्ट्रों जैसे दक्षिण कोरिया, आस्ट्रेलिया, जापान आदि के साथ संबंध स्थापित करने शुरू किए इसका उद्देश्य चीन तथा पाकिस्तान जैसे राष्ट्रों को अलग-थलग करना था। तथा चीन के इस क्षेत्र में वर्चस्व को कम करना। क्योंकि जापान के दो द्वीपों पर चीन अपना अधिकार बताता है तो जापान उससे बिल्कुल अलग है तो इसलिए भारत ने जापान के साथ संबंध बनाने शुरू किए।

निष्कर्ष -

इस क्षेत्र के सभी राष्ट्रों में सहअस्तित्व की भावना होनी चाहिए। इस क्षेत्र में जितने भी प्राकृतिक संसाधन है उन पर किसी एक राष्ट्र का वर्चस्व नहीं होना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों पर संतुलन बनाने की जरूरत है। इस क्षेत्र के प्रत्येक राष्ट्र को एक-दूसरे राष्ट्र का सहयोग करना चाहिए। चीन को अपनी शक्ति का प्रयोग करके इस क्षेत्र पर अपना अधिकार नहीं बनाना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र को यु0एन0ओ द्वारा दिए गऐ दिशा निर्देशों का पालन करना चाहिए। सामुद्रीक तथा अन्य अन्तराष्ट्रीय कानूनों का पालन करना चाहिए। एक दूसरे का कुटनीतिक सहयोग करना चाहिए। तकनीको का हस्तांतरण करना चाहिए। तभी इस क्षेत्र में शांति बनाई जा सकती है। अगर इस क्षेत्र में शांति बनाई जा सकती है तो पुरा विश्व भारत पर नजरें लगाए हुए है क्योंिक भारत एक मात्र ऐसा राष्ट्र है जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के सभी राष्ट्रों के साथ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है तथा आर्थिक एवं सैनिक क्षेत्र में भी विश्व उभरता हुआ राष्ट्र है।

संदर्भ -

1. V.N. Khana, अंतराष्ट्रीय संबंध, Vikash Publishing, New Delhi.
2. U.R. Ghai, अंतराष्ट्रीय राजनीति सिद्धांत एवं व्यवहार, Sapna Publishing
3. प्रभुदत शर्मा, अंतराष्ट्रीय संबंध
4. B.C. Fadia, अंतराष्ट्रीय संबंध
5. Indo-Asian Summit, गृहमंत्रालय की वार्षिक रिर्पोट, 2015-16
6. Mehta - Indo-Pacific imperative.
7. U.R. Ghai, K.Chadha, अंतराष्ट्रीय कानून Sapna Publication

www.ignited.in

8. Pushpesh Pant, International Relation in the 21st Century, TMH Publication.

9. Puspash Chandra, International Relation, Vikash Publication House Pvt. Ltd., Jan. 2010

10. तपन बिसबालए अंतराष्ट्रीय संबंध, Laxmi Publication, Jan, 2009

Corresponding Author

Dr. Sonu*

Extension Lecturer in Political Science, Govt. College for Women Badhra, Charkhi Dadri, Haryana

bhardwajsonu80@gmail.com